2 अनुसन्धान की परिमाणात्मक पद्धति : सामाजिक सर्वेक्षण

[QUANTITATIVE METHOD OF RESEARCH : SOCIAL SURVEY]

डिल्थे (Dilthey) ने सबसे पहले यह कहा था कि प्रकृति और समाज को समान आधारों पर नहीं समझा जा सकता, अत: सामाजिक घटनाओं के अध्ययन से सम्बन्धित पद्धतियों की प्रकृति, प्राकृतिक विज्ञानों की पद्धतियों से भिन्न हो जाना स्वाभाविक है।[1] वास्तव में, सामाजिक घटनाएँ परिमाणात्मक और गुणात्मक दोनों तरह की होने के साथ जटिल, अमूर्त और परिवर्तनशील होती हैं। हमारी सांस्कृतिक विशेषताओं तथा मनोवृत्तियों में परिवर्तन होते रहने के कारण सामाजिक अनुसन्धान के लिए ऐसी पद्धतियों का उपयोग करना आवश्यक है जिनके द्वारा परिवर्तनशील सामाजिक घटनाओं का अध्ययन किया जा सके। इस सम्बन्ध में एक लम्बे समय तक कुछ विद्वानों का यह आरोप रहा कि सामाजिक अनुसन्धान के लिए जिन पद्धतियों का उपयोग किया जाता है, वे इतनी वैज्ञानिक नहीं होतीं कि उनके द्वारा पक्षपातरहित निष्कर्ष दिये जा सकें। फ्रांसीसी लेखक **हेनरी पाइनकर** (Henary Poincare) ने यहाँ तक कह दिया कि "समाजशास्त्र सबसे अधिक पद्धतियों वाला लेकिन सबसे कम परिणाम देने वाला विज्ञान है।"[2]

पाइनकर का यह कथन समाजशास्त्र के विकास के आरम्भिक काल के लिए भले ही कुछ ठीक रहा हो लेकिन आज सामाजिक घटनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए अनेक वैज्ञानिक पद्धतियाँ विकसित की जा चुकी हैं। यह सच है कि सामाजिक अनुसन्धान की अध्ययन पद्धतियाँ प्राकृतिक विज्ञानों की पद्धतियों के समान नहीं हैं लेकिन तो भी इनके द्वारा किसी घटना का पक्षपात रहित होकर अवलोकन करके वैज्ञानिक निष्कर्ष प्रस्तुत कर सकना सम्भव है। दूसरी बात यह है कि प्राकृतिक घटनाओं की तुलना में सामाजिक घटनाएँ अधिक जटिल होती हैं, अत: सामाजिक अनुसन्धान में प्रयुक्त होने वाली अध्ययन पद्धतियों की संख्या भी कुछ अधिक है।

साधारणतया सामाजिक तथ्यों को हम मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं—

(1) वे तथ्य जिन्हें मूर्त रूप से देखकर उनकी गणना संख्या में की जा सकती है। इन्हें हम परिमाणात्मक तथ्य कहते हैं। (2) वे तथ्य जो अमूर्त होते हैं तथा इनकी विशेषताओं को कुछ विशेष गुणों की सहायता से ही समझा जा सकता है। इन्हें हम गुणात्मक तथ्य कहते हैं। (3) विभिन्न व्यक्तियों और समूहों के दैनिक जीवन से सम्बन्धित वे तथ्य जिनका एक विशेष समूह के लिए विशेष अर्थ होता है। इन्हें प्रघटनाशास्त्रीय तथ्य कहा जाता है। स्पष्ट है कि सामाजिक अनुसन्धान से सम्बन्धित विभिन्न पद्धतियों को हम परिमाणात्मक, गुणात्मक तथा प्रघटनाशास्त्रीय जैसे तीन मुख्य भागों में विभाजित करके समझ सकते हैं। इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि विभिन्न प्रकार की परिमाणात्मक और गुणात्मक सामाजिक घटनाओं की प्रकृति भी समान नहीं होती।

इस दशा में परिमाणात्मक और गुणात्मक पद्धतियों की संख्या भी काफी अधिक है। यह सामाजिक घटना की प्रकृति और अध्ययन के दृष्टिकोण पर निर्भर होता है कि एक विशेष अवधि में किसी विषय पर अनुसन्धान करने के लिए इनमें से किस पद्धति का प्रयोग करना अधिक उपयोगी हो सकता है। प्रस्तुत विवेचन में हम इन पद्धतियों की प्रकृति को संक्षेप में स्पष्ट करके अनुसन्धान में उनकी उपयोगिता को स्पष्ट करेंगे।

---

1 W. Dilthey, *Survey Methods in Social Investigation*, Quoted by Moser.

2 *"Sociology is a science with maximum methods and minimum results."* —*Henary Poincare*

Scanned with CamScanner

सामाजिक जीवन में बहुत-सी घटनाएँ और तथ्य इस तरह के होते हैं जिनका प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन करके उनकी गणना की जा सकती है। शाब्दिक रूप से 'Quantity' अथवा 'परिमाण' का अर्थ है 'मात्रा'। किसी समूह के सदस्यों की संख्या, उनकी आयु, परिवार की वार्षिक आय, व्यवसाय की प्रकृति, शिक्षा का स्तर, रहन-सहन के तरीके तथा सांस्कृतिक व्यवहार आदि इस तरह के विषय हैं जिनकी प्रकृति और मात्रा को संख्या में प्रस्तुत करके व्यवस्थित निष्कर्ष दिये जा सकते हैं। इस प्रकार जिन पद्धतियों के द्वारा मूर्त तथ्यों का अवलोकन करके संख्यात्मक आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किये जाते हैं, उन्हें हम अनुसन्धान की परिमाणात्मक पद्धतियाँ कहते हैं। इनमें सामाजिक सर्वेक्षण पद्धति सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं—

सामाजिक सर्वेक्षण पद्धति
(SOCIAL SURVEY METHOD)

सामाजिक तथ्यों का अध्ययन करने में सामाजिक सर्वेक्षण पद्धति का सदैव से ही बहुत महत्व रहा है लेकिन इसे सबसे पहले वैज्ञानिक रूप से परिभाषित करने और व्यापक रूप से उपयोग में लाने का श्रेय लीप्ले (Lep-Play) को है। वैसे तो ईसा से 300 वर्ष पहले मिस्र में जनसंख्या व सम्पत्ति का अध्ययन करने के लिए हैरोडोटस (Herodutus) ने इस पद्धति का उपयोग किया था लेकिन 18वीं शताब्दी के आरम्भ में जॉन हावर्ड (John Howard) ने इसका उपयोग बहुत व्यापक रूप से किया और बाद में, लीप्ले ने इस पद्धति को सामाजिक घटनाओं के अध्ययन का महत्वपूर्ण माध्यम बना दिया। इसके अतिरिक्त चार्ल्स बूथ (Charles Booth), राउण्ट्री (Rountree) तथा आर्थर बाउले (Arthur Bowley) ने भी सामाजिक सर्वेक्षण पद्धति का व्यापक रूप से उपयोग किया है।

'सर्वेक्षण' शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द *'Survey'* का हिन्दी रूपान्तर है। Survey शब्द दो विभिन्न स्थानों के शब्दों से मिलकर बना है—पहला शब्द 'Sur' है जिसकी उत्पत्ति फ्रेंच भाषा से हुई है तथा दूसरा शब्द 'Veeir' है जो लैटिन भाषा से लिया गया है। इन दोनों शब्दों का अर्थ क्रमशः 'ऊपर' (Over) तथा 'देखना' (To look over) अथवा उसका अवलोकन करना है। वर्तमान समय में सर्वेक्षण के केवल इसी अर्थ को पर्याप्त नहीं समझा जाता बल्कि एक पद्धति के रूप में सामाजिक सर्वेक्षण का उपयोग एक विशेष अर्थ में किया जाने लगा है। आज सर्वेक्षण का तात्पर्य एक ऐसी अनुसन्धान प्रणाली से है जिसके अन्तर्गत अध्ययनकर्ता अध्ययन से सम्बन्धित स्थान पर स्वयं जाकर सामाजिक घटना या स्थिति का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन करता है और विषयों से सम्बन्धित तथ्यों को एकत्रित करके सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत करता है। इसी आधार पर यह कहा गया है कि "यथार्थ सूचना प्राप्त करने के लिए किया गया आलोचनात्मक अवलोकन ही सामाजिक सर्वेक्षण है।"[1] **फेयरचाइल्ड** (Fairchild) द्वारा सम्पादित 'समाजशास्त्र के शब्दकोश' में कहा गया है कि "एक समुदाय के सम्पूर्ण जीवन अथवा उसके किसी एक पक्ष, जैसे—स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन आदि के सम्बन्ध में तथ्यों के बहुत कुछ व्यवस्थित और व्यापक संकलन एवं विश्लेषण को ही सामान्य शब्दों में सर्वेक्षण कहा जाता है।"[2] इस विवेचन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक सर्वेक्षण का सम्बन्ध सामाजिक जीवन के किसी एक पक्ष, विषय, घटना अथवा समस्या से सम्बन्धित तथ्यों के संकलन और विश्लेषण की प्रक्रिया से है।

जहाँ तक सामाजिक सर्वेक्षण की परिभाषा का प्रश्न है, विद्वानों ने सामाजिक सर्वेक्षण के उद्देश्यों तथा प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए इसे विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया है। इन विद्वानों द्वारा सामाजिक सर्वेक्षण की जो परिभाषाएँ दी गई हैं, वे मुख्य रूप से तीन दृष्टिकोणों पर आधारित हैं—(1) सामाजिक

1 "A critical inspection, often official, to provide exact information, often a study of an area with respect to a certain condition or its prevalance.....(is called Social Survey)."
—*Webster's Collegiate Dictionary*

2 "A term.....used rather loosely to indicate a more or less orderly and comprehensive gathering and analysis of facts about the total life of a community or some phase of it e.g., health, education, recreation....."
—Fairchild, *Dictionary of Sociology*

Scanned with CamScanner

सर्वेक्षण एक वैज्ञानिक पद्धति के रूप में, (2) सामाजिक सर्वेक्षण सामाजिक जीवन की सामान्य घटनाओं के अध्ययन के रूप में तथा (3) सामाजिक सर्वेक्षण प्रगति एवं सुधार के प्रयत्न के रूप में। इन सभी आधारों पर सामाजिक सर्वेक्षण की परिभाषाओं को इस प्रकार समझा जा सकता है—

(I) वैज्ञानिक पद्धति के रूप में (As a Scientific Method)

इस वर्ग के अन्तर्गत उन विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाएँ आती हैं जो सामाजिक सर्वेक्षण की विवेचना एक वैज्ञानिक पद्धति के रूप में करते हैं। **मोर्स** (H. N. Morse) के शब्दों में, "सामाजिक सर्वेक्षण सुस्पष्ट उद्देश्य से किसी विशेष सामाजिक परिस्थिति, समस्या अथवा जनसंख्या का व्यवस्थित और वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण करने की एक पद्धति है।"[1] इसका तात्पर्य यह है कि मोर्स सामाजिक सर्वेक्षण को एक ऐसी वैज्ञानिक पद्धति मानते हैं जिसके द्वारा किसी विशेष सामाजिक परिस्थिति, समस्या अथवा समूह का वैज्ञानिक अध्ययन किया जा सके। इसी प्रकार के विचार प्रस्तुत करते हुए **मोजर** (C. A. Moser) ने लिखा है कि "समाजशास्त्रियों को चाहिए कि वे सर्वेक्षण को एक ऐसी उपयोगी पद्धति के रूप में देखें जिससे कि समस्या से सम्बन्धित अध्ययन-क्षेत्र और सम्बद्ध तथ्यों का अन्वेषण किया जा सके एवं समस्या को प्रकाश में लाने के साथ ही अन्वेषण-योग्य तथ्यों की ओर संकेत किया जा सके।"[2] **हैरिसन** (Harrison) ने इसी तथ्य को कुछ भिन्न शब्दों में स्पष्ट करते हुए कहा है कि "सामाजिक सर्वेक्षण एक सहकारी प्रयत्न है जिसके अन्तर्गत किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र में पायी जाने वाली सामाजिक दशाओं तथा समस्याओं के अध्ययन और विश्लेषण के लिए वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया जाता है।"[3]

(II) सामाजिक जीवन की सामान्य घटनाओं के अध्ययन के रूप में (As a Study of General Social Phenomena of Social Life)

कुछ विद्वानों ने सामाजिक सर्वेक्षण को एक ऐसे अध्ययन के रूप में परिभाषित किया है जिसकी सहायता से सामाजिक जीवन की सामान्य घटनाओं को प्रकाश में लाया जा सके। इस सम्बन्ध में **वेल्स** (A. F. Wells) का कथन है कि "साधारणतया सामाजिक सर्वेक्षण को एक क्षेत्र विशेष में रहने वाले व्यक्तियों की सामाजिक संस्थाओं और क्रियाकलापों के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"[4] **बोगार्डस** (Bogardus) ने सामाजिक सर्वेक्षण के अध्ययन-क्षेत्र तथा उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है "विस्तृत अर्थों में सामाजिक सर्वेक्षण का तात्पर्य किसी विशेष समुदाय के लोगों के जीवन और कार्य की दशाओं से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन करना है।"[5] लगभग इसी भावना के अनुरूप **सिन पाओ येंग** (Hsin Pao Yang) के शब्दों में कहा जा सकता है कि "सामाजिक सर्वेक्षण प्राय: एक समूह के लोगों की रचना, क्रिया-कलापों तथा रहन-सहन की दशाओं के सम्बन्ध में एक जाँच कार्य है।"[6]

(III) सामाजिक प्रगति एवं सुधार के प्रयत्न के रूप में (As an Effort of Social Progress and Reform)

इस श्रेणी के अन्तर्गत उन विद्वानों की परिभाषाएँ आती हैं जिन्होंने सामाजिक सर्वेक्षण को सामाजिक समस्याओं और समाज-सुधार से सम्बन्धित अध्ययन के रूप में स्पष्ट किया है। **पी. वी. यंग**

1 "The social survey is in brief, simply a method of analysis in scientific and orderly form and for defined purposes of a given social situation or problem or population."
—H. N. Morse, *The Social Survey in Town and Country Areas*, p. 104.

2 "The Sociologists should look upon surveys a way, and a supreme useful one of exploring the field of collecting data around as well as directly on the subject of study, so that the problem is brought into focus and the points worth pursuing are suggested."
—C. A. Moser, *Survey Method in Social Investigation*, p. 4.

3 "Social survey is a co-operative undertaking which applies scientific method to the study and treatment of current related social problems and conditions, having definite geographical limits and bearings....."
—S. M. Harrison, *A Bibliography of Social Surveys*, p. 204.

4 "The social survey may generally be defined as a study of social institutions and activities of group of persons living in a particular locality." —A. F. Wells, *The Local Social Survey in Britain*, p. 7.

5 "A social survey is the collecting of data concerning the living and working conditions, broadly speaking of the people in a given community."
—E. S. Bogardus, *Sociology*, p. 543.

6 "A social survey is usually an inquiry into the composition, activities and living conditions of a group of people."
—Hsin Pao Yang, *Fact Finding with Rural People*, p. 3.

Scanned with CamScanner

ने इस दृष्टिकोण से सामाजिक सर्वेक्षण की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए कहा है कि "सामाजिक सर्वेक्षण (क) समाज-सुधार की किसी रचनात्मक योजना के निरूपण और (ख) निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में व्याप्त तथा निश्चित सामाजिक परिणामों और सामाजिक महत्व वाली किसी प्रचलित अथवा तात्कालिक व्याधिकीय दशा के सुधार से सम्बन्धित है; (ग) इन दशाओं की ऐसी परिस्थितियों से तुलना तथा माप की जा सकती है जिन्हें अक्सर आदर्श परिस्थितियाँ माना जाता है।"[1] इस कथन के द्वारा यंग ने यह स्पष्ट किया है कि सामाजिक सर्वेक्षण एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र के अन्दर किया जाता है तथा इसका उद्देश्य सामाजिक महत्व की समस्याओं से सम्बन्धित तथ्यों को प्रकाश में लाना होता है। यही कारण है कि रचनात्मक कार्यक्रमों को लागू करने के लिए सामाजिक सर्वेक्षण अत्यधिक महत्वपूर्ण होते हैं। **बर्गेस** (E. W. Burgess) ने भी सामाजिक सर्वेक्षण के रचनात्मक पहलू पर जोर देते हुए लिखा है कि "एक समुदाय का सर्वेक्षण वहाँ की दशाओं तथा आवश्यकताओं का वैज्ञानिक अध्ययन है तथा इसका उद्देश्य सामाजिक विकास की एक रचनात्मक योजना प्रस्तुत करना होता है।"[2]

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि सामाजिक सर्वेक्षण सामाजिक अध्ययन की एक वैज्ञानिक पद्धति है जिसके अन्तर्गत एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र में किसी समस्या से सम्बन्धित तथ्यों का पक्षपात रहित होकर संकलन किया जाता है तथा तथ्यों के आधार पर ऐसे उपयोगी निष्कर्ष दिए जाते हैं जिनकी सहायता से सामाजिक विकास तथा जन-कल्याण कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक लागू किया जा सके।

सामाजिक सर्वेक्षण की विशेषताएँ
(CHARACTERISTICS OF SOCIAL SURVEY)

सामाजिक सर्वेक्षण की विभिन्न परिभाषाओं से कभी-कभी बहुत भ्रमपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इस स्थिति में सामाजिक सर्वेक्षण की प्रकृति को समझने के लिए यह आवश्यक है कि इसकी प्रमुख विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख किया जाय। यह सम्भव है कि विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षणों के उद्देश्य एक-दूसरे से कुछ भिन्न होने के कारण उनके स्वरूप में कुछ भिन्नता दिखायी दे लेकिन सभी सर्वेक्षणों में कुछ ऐसी आधारभूत विशेषताएँ पायी जाती हैं जिन्हें सामान्य विशेषताएँ कहा जा सकता है। ये विशेषताएँ मुख्य रूप से निम्न प्रकार हैं—

(1) **सामाजिक सर्वेक्षण एक वैज्ञानिक पद्धति** (Social Survey is a Scientific Method)—सामाजिक सर्वेक्षण की प्रकृति पूर्णतया वैज्ञानिक है। इसके अन्तर्गत तथ्यों को व्यवस्थित और वैज्ञानिक रूप से एकत्रित करने के लिए उन सभी चरणों का प्रयोग किया जाता है जो वैज्ञानिक पद्धति से सम्बन्धित हैं। एक सर्वेक्षणकर्ता जब कभी भी किसी समूह, समुदाय अथवा समस्या से सम्बन्धित तथ्यों का एकत्रीकरण करता है तो इस कार्य में अनेक निजी विचारों अथवा भावनाओं का कोई महत्व नहीं होता। सर्वेक्षण के आधार पर दिया गया समीकरण (Generalization) भी वैज्ञानिक नियमों के समान ही महत्वपूर्ण होता है।

(2) **सामान्य सामाजिक घटनाओं का अध्ययन** (Study of General Social Phenomena)—सामाजिक सर्वेक्षण का उद्देश्य किसी विशिष्ट अथवा वैयक्तिक घटना का अध्ययन करना नहीं होता। इसका सम्बन्ध सामान्य सामाजिक घटनाओं के अध्ययन से है। इसके पश्चात् भी ऐसा अध्ययन पूर्णतया वस्तुनिष्ठ होता है क्योंकि अध्ययनकर्ता किसी भी घटना को देखने और समझने में एक तटस्थ निरीक्षक के रूप में कार्य करता है। सामान्य सामाजिक घटनाओं के अध्ययन के कारण ही सामाजिक सर्वेक्षण का महत्व सम्पूर्ण समूह के लिए स्वीकार किया जाता है।

(3) **निश्चित भौगोलिक क्षेत्र** (Definite Geographical Limits)—सामाजिक सर्वेक्षण सदैव एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र तक ही सीमित होता है। यह सच है कि किसी विशेष समस्या का सम्बन्ध एक बहुत बड़े क्षेत्र से हो सकता है लेकिन सर्वेक्षण के लिए एक विशेष गाँव, नगर अथवा क्षेत्र को ही चुना जाता है जिससे अध्ययन को अधिक वैज्ञानिक बनाया जा सके। **हैरिसन** का कथन है कि सम्पूर्ण समाज को हम सामाजिक सर्वेक्षण की विषय-वस्तु नही बना सकते; सामाजिक

1 P. V. Young, *Scientific Social Survey and Research*, pp. 17-18.

2 "A survey of a community is a scientific study of its conditions and needs for the purpose of presenting a constructive programme of social advancement."
—E. W. Burgess, *American Journal of Sociology*, Vol. XXI (1961), p. 492.

Scanned with CamScanner